बी.एच.आई.सी.-131 : भारत का इतिहास : प्राचीनतम काल से लगभग 300 सी.ई. तक
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BHIC-131**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.सी. -131 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-2027**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए।

1) पुरातात्विक अन्वेषण को स्पष्ट कीजिए। भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ प्रमुख स्थलों पर चर्चा कीजिए। 20

2) परिपक्व हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख चरण की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए।

3) प्राचीन भारत में कुछ क्षेत्रों के गठन की प्रक्रिया का विश्लेषण कीजिए। 10

4) मौर्य प्रशासन की प्रमुख विशेषताऐं क्या थीं? 10

5) ई.पू. छठी शताब्दी में नवीन धार्मिक–विचारों के उदय में लिए उत्तरदायी कारकों की विवेचना कीजिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए।

6) पूर्व वैदिक धर्म 6

7) सातवाहन वंश के इतिहास की रूपरेखा 6

8) बुद्ध के उपदेश 6

9) तिनैं अवधारणा 6

10) संगम साहित्य 6

1) पुरातात्विक अन्वेषण को स्पष्ट कीजिए। भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ प्रमुख स्थलों पर चर्चा कीजिए। 20

उत्तर:

पुरातात्विक अन्वेषण का अर्थ

पुरातात्विक अन्वेषण अतीत के मानव जीवन को भौतिक अवशेषों के आधार पर समझने की वैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसमें बस्तियों, औजारों, मिट्टी के बर्तनों, भवनों, हड्डियों, बीजों, सिक्कों, मुहरों, शिलालेखों और अन्य अवशेषों को उनके मूल संदर्भ के साथ खोजा, दर्ज और विश्लेषित किया जाता है। लिखित स्रोत जहाँ उपलब्ध नहीं होते, वहाँ पुरातत्त्व इतिहास-लेखन का मुख्य आधार बन जाता है; और जहाँ लिखित स्रोत मिलते हैं, वहाँ भी यह उन्हें जाँचने तथा सामाजिक और आर्थिक जीवन की अधिक ठोस तस्वीर बनाने में सहायता करता है। इसलिए पुरातात्विक अन्वेषण केवल वस्तुएँ एकत्र करने का काम नहीं है, बल्कि स्थल, परत, काल और मानव क्रिया के संबंध को समझने की विधि है।

सर्वेक्षण, उत्खनन और तिथि-निर्धारण

अन्वेषण प्रायः क्षेत्रीय सर्वेक्षण से आरम्भ होता है। पुरातत्त्वविद् धरातल पर दिखाई देने वाले टीले, मृद्भांड के टुकड़े, पत्थर के औजार, प्राचीन ईंटें तथा जल-स्रोतों और मार्गों के पास बस्तियों के संकेत दर्ज करते हैं। आज उपग्रह चित्र, भौगोलिक सूचना प्रणाली और भू-भौतिकीय परीक्षण भी उपयोगी हैं, पर स्थल पर प्रत्यक्ष जाँच आवश्यक रहती है। चयनित स्थान पर नियंत्रित उत्खनन किया जाता है। मिट्टी की परतों का क्रम, अर्थात स्तरीकरण, यह बताता है कि कौन-सा अवशेष पहले और कौन-सा बाद का है। हर वस्तु की गहराई, स्थान और साथ मिले अवशेष दर्ज किए जाते हैं, क्योंकि संदर्भ खो जाने पर उसका ऐतिहासिक अर्थ भी कमजोर हो जाता है। सापेक्ष तिथि के लिए मृद्भांड-प्रकार और परत-क्रम, तथा उपयुक्त जैविक पदार्थों के लिए रेडियोकार्बन जैसी वैज्ञानिक तिथि-विधियाँ उपयोग में आती हैं। वनस्पति-अवशेष, पशु-अस्थियाँ और मिट्टी के नमूने भोजन, पर्यावरण और उत्पादन की जानकारी देते हैं।